पूर्वांचल

भारत के पूर्वांचल में
लघु-लघु
घन- शिशु,
नील गगन में
स्वर्णिम आभा
सविता की पहली नवेली
सुबह की नई- नई रश्मि रेखाएं
अलौकिक प्रभा पुंज,
रजनी में
चांद और चांदनी पूनम की चांदनी

रफिकुल हक
पूर्व एसोसिएट प्रोफेसर
हिंदी विभाग
पाण्डु महाविद्यालय,
गुवाहाटी, असम

मणिपुर

स्वच्छ सरोवर,
तैरता हुआ घर,
हरी- हरी घांस और
झांरियां,
हरीतिमा से सुसज्जित
पहाड़ियां।
कल- कल करते,
छल- छल करते,हिलमिल
रहते झरने।
मणि- माणिक्य की भूमि
मणिपुर,
कांति- किरणों की भूमि
मणिपुर,
महिलाओं की भूमि मणिपुर,
नृत्यों की भूमि मणिपुर।
घरेलू कामों में,
दुकान संभालने में,
क्रय- विक्रय करने में,
महिलाओं ने प्रसिद्धि पाई है,
हथकरघा में भी
अपनी-अपनी कलाओं की
खूबी दिखाई है ।

'इमा बाजार' महिलाओं का
बाजार है
'महारास', 'माजिरा' और
'लाल हरोबा' त्योहार हैं
नया परिधान धारण कर नर
- नारी नृत्य करते हैं
'पुग चोलोम' और 'होईलाम'
में
दिल खोलकर वे हिस्सा लेते
हैं ।
इंफाल में ही नेताजी सुभाष
ने
अपनी सेना को संजोया,
जब वे सेनाध्यक्ष थे
आजाद हिंद फौज के ।
।१५५ की सुरमई शाम
भारत की सरजमीं पर
मैरांग में ही पहली बार
तिरंगा झंडा फहराया गया ।
मणिपुरी अपना परिचय
महाभारत की कथा से जोड़ते
हैं
अपनी परंपरा वे
अर्जुन-चित्रांगदा से भी
मानते हैं
यह पहाड़ी पूर्व प्रांत है
अर्जुन- पुत्र वीर बब्रूवाहन
का
यह प्रदेश रहा
सम्राट पखवाद का ।
अनेक राज्य जीता सम्राट ने
नागालैंड को भी जीते उसने
अपनी मुकुटमणि विजित
नागराज ने
सम्राट पखवाद को समर्पित
किया
प्रांत मणिपुर का नामकरण
हो गया।